

سُورَةُ عَبَسَ

Surah 80 — Abasa (He frowned) · Meccan · 42 Ayahs · Translation: Hindi

1

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ عَبَسَ وَتَوَلَّى

वह अपनी बात पर चीं ब जबीं हो गया

2

أَنْ جَاءَهُ الْأَعْمَى

और मुँह फेर बैठा कि उसके पास नाबीना आ गया

3

وَمَا يُدْرِيكَ لَعَلَّهُ ۖ يَزَكَّى

और तुमको क्या मालूम यायद वह (तालीम से) पाकीज़गी हासिल करता

4

أَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرَى

या वह नसीहत सुनता तो नसीहत उसके काम आती

5

أَمَّا مَنْ أَسْتَغْنَى

तो जो कुछ परवाह नहीं करता

6

فَأَنْتَ لَهُ ۖ تَصَدَّى

उसके तो तुम दरपै हो जाते हो हालाँकि अगर वह न सुधरे

7

وَمَا عَلَيْكَ إِلَّا يَزَكَّى

तो तुम ज़िम्मेदार नहीं

8

وَأَمَّا مَنْ جَاءَكَ يَسْعَىٰ

और जो तुम्हारे पास लपकता हुआ आता है

9

وَهُوَ يَخْشَىٰ

और (खुदा से) डरता है

10

فَأَنْتَ عَنْهُ تَلَهَّىٰ

तो तुम उससे बेरुखी करते हो

11

كَأَلَّا إِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ۖ

देखो ये (कुरान) तो सरासर नसीहत है

12

فَمَنْ شَاءَ ذَكَّرْهُ ۖ

तो जो चाहे इसे याद रखे

13

فِي صُحُفٍ ۖ مُكْرَمَةٍ ۖ

(लौहे महफूज के) बहुत मोअज़ज़िज औराक में (लिखा हुआ) है

14

مَرْفُوعَةٍ ۖ مُطَهَّرَةٍ ۖ

बुलन्द मरतबा और पाक हैं

15

بِأَيْدِي سَفَرَةٍ ۖ

(ऐसे) लिखने वालों के हाथों में है

16

كَرَامٍ ۚ بَرَّةٍ ۚ

जो बुज़ुर्ग नेकोकार हैं

17

قُتِلَ الْإِنْسَانُ مَا أَكْفَرَهُ ۚ

इन्सान हलाक हो जाए वह क्या कैसा नाशुक्रा है

18

مِنْ أَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهُ ۚ

(खुदा ने) उसे किस चीज़ से पैदा किया

19

مِنْ نُّطْفَةٍ خَلَقَهُ ۚ فَقَدَرَهُ ۚ

नुत्फे से उसे पैदा किया फिर उसका अन्दाज़ा मुकर्रर किया

20

ثُمَّ السَّبِيلَ يَسَّرَهُ ۚ

फिर उसका रास्ता आसान कर दिया

21

ثُمَّ أَمَاتَهُ ۚ فَأَقْبَرَهُ ۚ

फिर उसे मौत दी फिर उसे कब्र में दफ़न कराया

22

ثُمَّ إِذَا شَاءَ أَنشَرَهُ ۚ

फिर जब चाहेगा उठा खड़ा करेगा

23

كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَا أَمَرَهُ ۚ

सच तो यह है कि खुदा ने जो हुक्म उसे दिया उसने उसको पूरा न किया

24

فَلْيَنْظُرِ الْإِنْسَانُ إِلَى طَعَامِهِۦۙ

तो इन्सान को अपने घाटे ही तरफ़ ग़ौर करना चाहिए

25

أَنَا صَبَبْنَا الْمَاءَ صَبًّاۙ

कि हम ही ने (बादल) से पानी बरसाया

26

ثُمَّ شَقَقْنَا الْأَرْضَ شَقًّاۙ

फिर हम ही ने ज़मीन (दरख्त उगाकर) चीरी फाड़ी

27

فَأَنْزَلْنَا فِيهَا حَبًّاۙ

फिर हमने उसमें अनाज उगाया

28

وَعِنَبًّاۙ وَقَضْبًّاۙ

और अंगूर और तरकारियाँ

29

وَزَيْتُونًاۙ وَنَخْلًاۙ

और ज़ैतून और खजूरें

30

وَحَدَائِقَ غُلْبًاۙ

और घने घने बाग़ और मेवे

31

وَفُكْهَةًۙ وَأَبًّاۙ

और चारा (ये सब कुछ) तुम्हारे और तुम्हारे

32

مَتَّعًا لَّكُمْ وَلِأَنْعَمِكُمْ

चारपायों के फायदे के लिए (बनाया)

33

فَإِذَا جَاءَتِ الصَّاحَّةُ

तो जब कानों के परदे फाड़ने वाली (क्रियामत) आ मौजूद होगी

34

يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ أَخِيهِ

उस दिन आदमी अपने भाई

35

وَأُمِّهِ وَأَبِيهِ

और अपनी माँ और अपने बाप

36

وَصَحْبَتِهِ وَبَنِيهِ

और अपने लड़के बालों से भागेगा

37

لِكُلِّ أَمْرٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَأْنٌ يُغْنِيهِ

उस दिन हर शख्स (अपनी नजात की) ऐसी फ़िक्र में होगा जो उसके (मशगूल होने के) लिए काफ़ी हों

38

وُجُوهٌ يَوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ

बहुत से चेहरे तो उस दिन चमकते होंगे

39

ضَاكِكَةً مُّسْتَبْشِرَةً

खन्दाँ शादाँ (यही नेको कार हैं)

40

وَوُجُوهُ ۚ يَوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ۚ

और बहुत से चेहरे ऐसे होंगे जिन पर गर्द पड़ी होगी

41

تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ

उस पर सियाही छाई हुई होगी

42

أَوْ ۚ لَّيْكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ

यही कुफ़ार बदकार हैं